

फुल स्टॉप - 43

अव्यक्त बापदादा :- (22.01.1988)

» _ » ब्रह्मा की विशेष इस बात की कमाल रही जो आप सबके आगे साकार रूप में ब्रह्मा बाप एगजैम्पल था लेकिन ब्रह्मा के आगे कोई साकार एगजैम्पल नहीं था। सिर्फ अटल निश्चय, बाप की श्रीमत का आधार रहा। आप लोगों के लिए तो बहुत सहज है और जितना जो पीछे आये हैं, उनके लिए और सहज है। क्योंकि अनेक आत्माओं के परिवर्तन की श्रेष्ठ जीवन आपके आगे एगजैम्पल है। यह करना है, बनना है - क्लीयर है। इसलिए, आप लोगों को 'क्यूं, क्या' का क्वेश्चन उठने का मार्जिन नहीं है। सब देख रहे हो। लेकिन ब्रह्मा के आगे क्वेश्चन उठने की मार्जिन थी। क्या करना है, आगे क्या होना है, राइट कर रहा हूँ वा रांग कर रहा हूँ - यह संकल्प उठना सम्भव था लेकिन सम्भव को असम्भव बनाया।

» _ » एक बल एक भरोसा - इसी आधार से निश्चयबुद्धि नम्बरवन विजयी बन गये। इसी समर्पणता के कारण बुद्धि सदा हल्की रही, बुद्धि पर बोझ नहीं रहा। मन निश्चिन्त रहा। चेहरे पर सदा ही बेफिकर बादशाह के चिन्ह स्पष्ट देखे। 350 बच्चे और खाने के लिए आटा नहीं और टाइम पर बच्चों को खाना खिलाना है! तो सोचो, ऐसी हालत में कोई बेफिकर रह सकता है एक बजे बेल (घन्टी) बजना है और 11.00 बजे तक आटा नहीं, कौन बेफिकर रह सकता? ऐसी हालत में भी हर्षित, अचल रहा।

» _ » यह बाप की जिम्मेवारी है, मेरी नहीं है, मैं बाप का तो बच्चे भी बाप के हैं, मैं निमित्त हूँ। - ऐसा निश्चय और निश्चिन्त कौन रह सकता? मन-बुद्धि से समर्पित आत्मा। अगर अपनी बुद्धि चलाते कि पता नहीं क्या होगा, सब भूखे तो नहीं रह जायेंगे, यह तो नहीं होगा, वह तो नहीं होगा - ऐसे व्यर्थ संकल्प वा संशय की मार्जिन होते हुए भी समर्थ संकल्प चले कि सदा बाप रक्षक है, कल्याणकारी है। यह विशेषता है समर्पणता की।

» _ » तो जैसे ब्रह्मा बाप ने समर्पण हाने से पहला कदम 'हिम्मत' का उठाया, ऐसे फालो फादर करो। निश्चय की विजय अवश्य होती है। तो टाइम पर आटा भी आ गया, बेल भी बज गया और पास हो गये। इसको कहते हैं **क्वेश्चन मार्क** अर्थात् टेढ़ा रास्ता न ले सदा कल्याण की बिन्दी लगाओ। फुलस्टाप। इसी विधि से ही सहज भी होगा और सिद्धि भी प्राप्त होगी। तो यह भी ब्रह्मा की कमाल। आज पहला एक कदम सुनाया है। **फिकर के बोझ से भी बेफिकर बन जाओ। इसको की कहा जाता है स्नेह का रिटर्न करना।**

➤➤ क्वेश्चन मार्क टेढ़ा रास्ता है...

» _ » सदा कल्याण की बिंदी लगाओ...

→ समर्पण भाव, मेरा कुछ भी नहीं, जो कुछ है, उसका है...

■ ब्रह्मा बाबा के जीवन में कितनी अचल अवस्था रही...

■ 350 बच्चे यग्य में और खाना कुछ भी नहीं...

■ पर अवस्था अचल अडोल, निश्चिन्त...

➤➤ ब्रह्मा बाबा के जीवन की 10 परीक्षाएं

➤➤ 5 पाकिस्तान में, 5 भारत में आने के बाद

➤➤ पाकिस्तान में ब्रह्मा बाबा के जीवन में परीक्षाएं

➤➤_ ➤➤ साक्षात्कार हुए और इतना बड़ा बिजनेस छोड़ दिया...

→ फायदा नुकसान कुछ नहीं सोचा...

■ संसार में इतना बड़ा निर्णय कुमार और कुमारियाँ ले ही नहीं पाते...

▶ तोड़ निभाया नहीं ब्रह्मा बाबा ने कि ये भी चलने दो और ये भी...

▶ इतना समर्पण भाव

➤➤_ ➤➤ ओपोजिशन

→ हर एक अपने confirt zone में है...

→ वहां से दूसरे जगह भेज दिया जाये..

■ फिर भी अचल अडोल...

■ ये समर्पणता की निशानी है...

▶ समाज से विरोध

▶ लौकिक सम्बन्धियों से विरोध

▶ धार्मिक संस्थाओं से

▶ इंडियन नेशनल कांग्रेस से

▶ धार्मिक नेताओं से भी विरोध

▶ सरकार से विरोध

■ फिर भी अचल अवस्था

■ ये मेरा काम है ही नहीं...

■ जादू टोना करने वाला, कामुक व्यक्ति कहा गया ब्रह्मा बाबा को... हिप्नोटिज्म के आरोप लगाये गये...

■ पर कोई मानहानि का बाबा ने कुछ नहीं किया...

■ सब साथी विरोधी बन गये...

■ एंटी ॐ मंडली के विरोध बढ़ते गये...

■ तब भी अचल रहे...

➤➤_ ➤➤ नया ज्ञान

→ शास्त्रों के विरुद्ध ज्ञान...

■ पर जो है, उसे वैसे ही प्रकट किया, कितनी समर्पणता है ये...

➤➤_ ➤➤ ब्रह्मचर्य

→ इस पर कितने हंगामे हुए, पर अचल रहकर ब्रह्मचर्य का संदेश दिया...

» _ » कराची में तपस्या

→ 14 साल सबकी पालना करना...

■ ऐसी निश्चिन्त अवस्था...

»» भारत में आने के बाद ब्रह्मा बाबा के जीवन में परीक्षाएं

» _ » प्राकृतिक परिस्थियाँ

→ नया स्थान, सांप, बिच्छू...

■ अपरिचित लोग, मौसम, स्वास्थ्य... इन सबका कुछ नहीं सोचा...

» _ » सेवाओं में ओपोजिशन

→ ब्रह्मा कुमारियों के प्रोग्राम चल रहे हैं, विरोध के पर्चे बांटे जा रहे थे...

→ उस समय भी पीछे नहीं हटे...

■ इतना समर्पण भाव...

▶ ये भगवान् का ज्ञान है इसे ऐसे ही देना है...

▶ चाहे सेंटर खाली करना पड़े... तुम भेड बकरियां हो क्या...

» _ » बेगरी पार्ट

→ जिसको जितना भाग्य लेना है, वो उतना ही लेगे...

■ जिसे ज्ञान छोड़ जाना है, उसे कितनी भी रोके, रोक नहीं सकते...

» _ » शारीरिक बीमारी

→ हमें आत्म अभिमानी बनना है, इसके लिए देह अच्छा चाहिए...

■ शरीर स्वस्थ हो...

▶ बीमारी में अचल अडोल रहना...

▶ खुद की व् दूसरों की बीमारी में भी.

» _ » मृत्यु

→ मम्मा, भाऊ के जाने के बाद भी अचल अडोल स्थिति...

■ खुद के जाने का भी उनको पता था...

▶ पर क्या होगा का कोई प्रश्न नहीं...

▶ निश्चिन्त स्थिति...

»» किसी से कुछ नहीं पूछा...

» _ » इतनी निश्चिन्त अवस्था रही... ये उसी का ही कार्य है, वो ही

जाने...

